IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

सरोज कुमार[1] एवं डॉ0 राज कुमार झा[2]

[1]शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र संकाय, बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

[2]सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, एल० एन० मिश्र कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, मुजफ्फरपुर।

सारांश : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में निर्धारित उद्देश्यों और समस्या की प्रकृति के आधार पर वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। इसके लिए न्यादर्श के रूप में सरकारी विद्यालय से 200 तथा गैर–सरकारी विद्यालय से 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन सभी न्यादर्श में दोनों प्रकार के विद्यालयों में से 100 छात्र तथा 100 छात्रा का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया, ftlls vè;;u dks vfèkd ljy vkSj çHkkoh cuk;k tk ldsA आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसे बुद्धि के तीनों प्रकारों के आधार पर तीन खंडों में बांटा गया। पहले खंड में सामाजिक बुद्धि से संबंधित प्रश्न शामिल किए गए, दूसरे खंड में अमूर्त बुद्धि से संबंधित प्रश्नों का उपयोग किया गया, और तीसरे खंड में मूर्त बुद्धि से संबंधित प्रश्न रखे गए। प्रत्येक खंड से 25–25 प्रश्नों की कुल 75 प्रश्नों की सूची तैयार की गई है। प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकी विश्लेषण हेतु क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि विद्यार्थियों में बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द : सरकारी तथा गैर–सरकारी विद्यालय, छात्र–छात्रा, बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना :–

शिक्षा एक सशक्त प्रक्रिया है जो सामाजीकरण को बढ़ावा देती है। यह बालक की पाश्विक और जैविक प्रवृत्तियों को संशोधित और परिमार्जित करती है। इसके माध्यम से, बालक अवस्था, लिंग और आयु के अनुसार सामाजिक मूल्यों को ग्रहण करता है और धीरे–धीरे एक जैविक प्राणी से सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्राणी में परिवर्तित होता है। उसकी ये सामाजिक और सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ न केवल व्यक्तिगत रूप से कल्याणकारी होती हैं, बल्कि समाज और मानवीय दृष्टि से भी लाभकारी सिद्ध होती हैं। यह सब केवल समाज में संचालित कुशल शिक्षा प्रक्रिया के कारण संभव हो पाता है। इसके साथ ही, शिक्षा बालक के समुचित समायोजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है, जो सीखने और सिखाने के कार्य को संपन्न करती है। यह स्पष्ट है कि शिक्षा नवजात और असहाय शिशु के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे वह अपने जीवन के विभिन्न दायित्वों को निभाने में सक्षम हो जाता है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, ''हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो चरित्र का निर्माण कर, मस्तिष्क की क्षमता को बढ़ाए, बुद्धि का विकास करे, और मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करे।"

बुद्धि एक ऐसा व्यापक और सामान्य शब्द है, जिसका प्रयोग हम अपनी रोजमर्रा की बातचीत में अक्सर करते हैं। यह शब्द उन गुणों को दर्शाता है, जैसे तेजी से सीखने और समझने की क्षमता, अच्छे स्मरण शक्ति, और तार्किक विचार करने की योग्यता। जब हम किसी व्यक्ति की सोचने की क्षमता या उसकी समझदारी की सोचतें हैं, तो हम आमतौर पर बुद्धि शब्द का सहारा लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति या बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने हेतु एक निश्चित स्तर की बुद्धि की जरूरत महसूस होती है। जैसे कि बच्चे अपने रंग, आकार, ऊँचाई, वजन, और स्वास्थ्य जैसे शारीरिक गुण एक दूसरे से भिन्न होते हैं, वैसे ही वे मानसिक गुण भी भिन्न–भिन्न होते हैं। एक आयु या कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे मानसिक गतिविधियों में तज होते हैं, कुछ औसत होते हैं, और कुछ कमजोर होते हैं। जसे–जैसे बच्चे बड़े होते हैं, उनकी व्यक्तिगत भिन्नताएँ और भी स्पष्ट होती जाती हैं। बच्चों के बीच इस प्रकार के अंतर 'बुद्धि' से ही होते हैं।

विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शिक्षा हासिल करने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है, जब विद्यार्थी में बुद्धि का विकास होता है तो वे अच्छी शिक्षा के साथ–साथ शैक्षिक उपलब्धियों को हासिल करने में सक्षम होते हैं।

2. संबंधित साहित्य का अध्ययन –

संबंधित साहित्य का गहन अध्ययन अनुसंधान कार्यों में मौजूद खामियों और शैक्षिक अनुसंधान के नवीनतम रुझानों की पहचान में सहायता करता है। यह अध्ययन अनुसंधान के क्षेत्र और समस्याओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है, जिससे रिपोर्ट को सटीकता और अर्थपूर्णता के साथ व्यवस्थित किया जा सके।

डॉ. कौशल द्विवेदी और उमाशंकर चितौशिया (2022) ने 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर बुद्धि की प्रभावशीलता का अध्ययन' शीर्षक के अंतर्गत एक अध्ययन किया। यह अध्ययन वर्तमान समय की एक महत्वपूर्ण समस्या पर आधारित है, जिसमें उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों को उदाहरण के रूप में लिया गया है। निष्कर्षों का विवरण प्रस्तुत करते हुए पाया गया कि 1. उच्च माध्यमिक स्तर पर बुद्धिमत्ता परीक्षण के निम्न और उच्च प्राप्तांकों वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों के औसत में महत्वपूर्ण अंतर है। 2. उच्च माध्यमिक स्तर पर बुद्धिमत्ता परीक्षण के निम्न और उच्च प्राप्तांकों वाले शहरी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों के औसत में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। 3. उच्च माध्यमिक स्तर पर बुद्धि परीक्षण के प्राप्तांकों के निम्न और उच्च समूहों के ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के औसत में यह देखा गया कि उच्च समूह के ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का औसत निम्न समूह के ग्रामीण छात्रों के प्राप्तांकों के औसत से प्रभावी रूप से अधिक है। 4. उच्च माध्यमिक स्तर के बुद्धि परीक्षण के प्राप्तांकों के निम्न और उच्च समूह ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के औसत में प्रभावी अंतर पाया गया।

डॉ. अनूप कुमार पोखरियाल और उषा पांगती (2023)23 ने 'उच्च एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक के अंतर्गत एक अध्ययन किया। इस शोध में उत्तराखण्ड राज्य के जनपद देहरादून से उच्च माध्यमिक स्तर के 602 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया है। विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से लाटरी के माध्यम से किया गया है। उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च और निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

डॉ. अजय पाल सिंह (2024) ने अपने शोध कार्य 'उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन' के लिए बहेड़ी तहसील के नगर क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों से 77 विद्यार्थियों का चयन किया। इस अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि के मापन के लिए डॉ. ए. के. सिंह और श्रुति नारायन द्वारा विकसित 'संवेगात्मक बुद्धि मापनी' का उपयोग किया गया। शोध कार्य को 'सर्वेक्षण विधि' के माध्यम से संपन्न किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के बीच एक सकारात्मक संबंध विद्यमान है।

संजय कुमार शुक्ल और सुनील सिंह (2024) ने 'माध्यमिक स्तर के हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के बौद्धिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन' किया। इस अध्ययन में प्रयोगात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। बौद्धिक स्तर को मापने के लिए डॉ. आर. के. टंडन द्वारा विकसित और प्रमापीकृत सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा (1/61) का सहारा लिया गया। शोध के निष्कर्षों में यह पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में स्थित हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के बौद्धिक स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

देवेन्द्र कुमार सिंह और डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव (2025) ने 'माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन' शीर्षक से एक महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है। इस अध्ययन में मध्यप्रदेश के सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 2 शहरी और 2 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया, जिससे कुल 32 विद्यालयों का समावेश हुआ। प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र और 20 छात्राओं का चयन किया गया, जिससे कुल 1280 विद्यार्थियों का अध्ययन दैव निदर्शन पद्धति के माध्यम से किया गया। शहरी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों का औसत प्रदर्शन ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की तुलना में अधिक है, जो यह दर्शाता है कि शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर उनकी बुद्धिमत्ता का प्रभाव अपेक्षाकृत बेहतर है। शोध के अनुसार, माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर उनकी बुद्धिमत्ता का एक महत्वपूर्ण सहसंबंध पाया गया है। इस प्रकार, ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर बुद्धिमत्ता के प्रभाव में एक स्पष्ट और महत्वपूर्ण अंतर देखा जाता है।

3. अध्ययन का उद्देश्य –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की बुद्धि के मध्य अन्तर का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

3. शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

4. अध्ययन की परिकल्पना

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की बुद्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

3. शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

5. शोध–विधि – अध्ययन में निश्चित किए गए उद्देश्यों तथा उनकी समस्या की प्रकृति के अनुरूप वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है।

जनसंख्या – अध्ययन में शोधार्थी द्वारा जनसंख्या के रूप में मुजफ्फरपुर जिला स्थित माध्यमिक विद्यालयी स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को लक्षित किया गया है।

न्यादर्श – सरकारी विद्यालयों से 200 छात्रों और गैर–सरकारी विद्यालयों से 200 छात्रों का चयन किया गया, जिसमें से प्रत्येक क्षेत्र से 100 छात्रों और 100 छात्राओं का चयन सुनिश्चित किया गया।

उपकरण – बुद्धि मापनी – स्वनिर्मित।

संवेगात्मक परिपक्वता मापनी – स्वनिर्मित।

शैक्षिक उपलब्धि मापनी – शैक्षिक उपलब्धि जानने हेतु उनके कक्षा 9 की वार्षिक परीक्षा की अंकतालिका।

सांख्यिकी – सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन (मानक विचलन), मध्यमान की मानक त्रुटि, मध्यमान की मानक त्रुटि, मध्यमान की मानक त्रुटि तथा दो मध्यमानों के अन्तर की जाँच (क्रान्तिक अनुपात), सहसम्बन्ध गुणांक, सह–सम्बन्ध गुणांक की सार्थकता का उपयोग किया गया।

6. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

शोधकर्ता द्वारा निश्चित परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का चयन किया और प्राप्त परिणामों को स्पष्टता के लिए सारणीबद्ध किया। इसके बाद, उन्होंने इन परिणामों की व्याख्या या स्पष्टीकरण का कार्य किया। सारणीबद्ध परिणामों के आधार पर, उनकी परिकल्पनाओं की व्याख्या इस प्रकार की गई है –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की बुद्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका : 1

विद्यार्थी	संख्या (N)	माध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (S.E.)	क्रान्तिक अनुपात (CR (t))	सार्थकता का स्तर
छात्र	200	62.25	10.79	0.27	0.59*	0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
छात्रा	200	62.41	10.20	0.23		

df = 200+200 - 2 = 398

सार्थकता हेतु मान 0.05 = 1.97

विवेचना – उपरोक्त तालिका 1 में माध्यमिक विद्यार्थियों की बुद्धि के मध्य छात्र और छात्राओं के आधार पर सांख्यिकीय परिणाम निकाले गए हैं। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान 62.25 है, जबकि छात्राओं का मध्यमान 62.41 है। इसके साथ ही, छात्रों का मानक विचलन 10.79 और छात्राओं का 10.20 है। मानक त्रुटि क्रमशः 0.27 और 0.23 दर्ज की गई है। जब इन मध्यमानों के बीच के अंतर की सार्थकता की जांच की गई, तो सी.आर. मूल्य 0.59 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर 1.97 और 0.01 स्तर पर 2.60 से कम है। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि माध्यमिक छात्र छात्राओं के बुद्धि में कोई भिन्नता नहीं पाई जाती है।

2. सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

तालिका : 2

विद्यालय	न्यादर्श	संख्या (N)	माध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (S.E.)	क्रान्तिक अनुपात (CR (t))	सार्थकता का स्तर
गैर–सरकारी	छात्र	100	64.98	8.72	0.12	2.80*	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
	छात्रा	100	63.94	11.09	0.20		
सरकारी	छात्र	100	60.57	9.06	0.11	2.05*	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
	छात्रा	100	60ण्85	8ण्03	0ण्19		

df = 200+200 - 2 = 398

सार्थकता हेतु मान 0.05 = 1.97

विवेचना – उपरोक्त तालिका 2 में विद्यालय के आधार पर छात्र–छात्राओं की बुद्धि के अन्तर से संबंधित सांख्यिकीय परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं। तालिका द्वारा स्पष्ट है गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की बुद्धि का मध्यमान 64.98 है, जबकि छात्राओं का मध्यमान 63.94 है। छात्रों और छात्राओं के लिए मानक विचलन क्रमशः 8.72 और 11.09 दर्ज किया गया

है। जब इन मध्यमान के बीच के अंतर की सार्थकता की जांच की गई, तो सी.आर. मूल्य 2.80 प्राप्त हुआ। सी.आर. का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.97 और 0.01 स्तर पर 2.60 है। चूंकि तालिका 2 में प्राप्त सी.आर. मूल्य इन सारणी मूल्यों से अधिक है, निष्कर्ष स्वरूप माध्यमिक स्तर के गैर–सरकारी छात्रों और छात्राओं की बुद्धि में एक महत्वपूर्ण अंतर है। इसी तरह सरकारी माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की बुद्धि के अन्तर को ज्ञात किया गया। छात्रों से प्राप्त मध्यमान 60.57 है, जबकि छात्राओं का मध्यमान 60.85 है। इन आंकड़ों का मानक विचलन क्रमशः 9.06 और 8.03 है। जब इन मध्यमानों के बीच के अंतर की सार्थकता की जांच की गई, तो सी.आर. मूल्य 2.05 प्राप्त हुआ। सी.आर. का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.97 और 0.01 स्तर पर 2.60 है। तालिका 2 के अनुसार, प्राप्त सी.आर. मूल्य सारणी मूल्य से अधिक है। उपरोक्त आंकड़ों से प्राप्त होता है कि माध्यमिक सरकारी विद्यालयों के छात्र छात्राओं की बुद्धि के मध्य एक विशेष अंतर विद्यमान है।

3. शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

तालिका : 3

क्षेत्र	न्यादर्श	संख्या (N)	माध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (S.E.)	क्रान्तिक अनुपात (CR (t))	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	छात्र	100	60.46	9.04	0.23	2.01*	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
	छात्रा	100	59.77	8.26	0.15		
शहरी	छात्र	100	65.05	9.45	0.07	2.19*	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
	छात्रा	100	64.31	10.15	0.09		

df = 200+200 - 2 = 398
सार्थकता हेतु मान 0.05 = 1.97

विवेचना – तालिका 3 द्वारा क्षेत्र आधारित माध्यमिक छात्र और छात्राओं की बुद्धि के बीच के अंतर से संबंधित सांख्यिकीय परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत छात्रों का बुद्धि का मध्यमान 60.46 है तथा छात्राओं का मध्यमान 59.77 है। इसके साथ ही, छात्रों और छात्राओं के लिए मानक विचलन क्रमशः 9.04 और 8.26 दर्ज किया गया है। जब इन मध्यमानों के बीच के अंतर की सार्थकता की जांच की गई, तो सी.आर. मूल्य 2.01 प्राप्त हुआ। सी.आर. का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.97 और 0.01 स्तर पर 2.60 है। तालिका 3 के अनुसार, प्राप्त सी.आर. मूल्य इन सारणी मूल्यों से ज्यादा है। निष्कर्ष में ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक छात्रों और छात्राओं की बुद्धि के मध्य महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। शहरी क्षेत्रों में अध्ययन कर रहे छात्रों की बुद्धि का मध्यमान 65.05 है, जबकि छात्राओं का मध्यमान 64.31 है। इसके साथ ही, छात्रों का मानक विचलन 9.45 और छात्राओं का 10.15 दर्ज किया गया है। जब प्राप्त मध्यमान के बीच के अंतर की सार्थकता की जांच की गई, तो सी.आर. मूल्य 2.19 प्राप्त हुआ। तुलना के लिए, सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.97 और 0.01 स्तर पर 2.60 है। तालिका 4.6 के अनुसार, जो सी.आर. मूल्य प्राप्त हुआ है, वह सारणी

मूल्य से कहीं ज्यादा है। अध्ययन में स्पष्ट है शहरी छात्र छात्राओं की बुद्धि में अंतर विद्यमान है।

7. निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध अध्ययन ''सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव'' है। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि माध्यमिक छात्र छात्राओं के बुद्धि में कोई भिन्नता नहीं पाई जाती है। विद्यालय के आधार पर निष्कर्ष में पाया गया कि गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालय में पढ़ाई कर रहे छात्रों एवं छात्राओं की बुद्धि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाई कर रहे छात्र छात्राओं से अधिक है। क्षेत्र पर आधारित अध्ययन के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि शहरी माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाई कर रहे छात्रों और छात्राओं की बुद्धि ग्रामीण क्षेत्र माध्यमिक विद्यालयां के छात्रों और छात्राओं से तुलनात्मक रूप में अधिक पाई गई है।

संदर्भ सूची

[1] अरोड़ा, रीटा व मारवाह, सुदे"ा, (2005) : 'f"kक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी', f"kक्षा प्रका"ान, जयपुर।

[2] स्वामी विवेकानन्द (1968) 'एजूकेशन', अद्वैत आश्रम, कलकत्ता।

[3] बी. एस. राजसपा (2010) शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व ।

[4] डॉ. कौशल द्विवेदी और उमाशंकर चितौशिया (2022) 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर बुद्धि की प्रभावशीलता का अध्ययन' इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, मॉडर्न मैनेजमेंट, एप्लाएड साइंस एण्ड सोशल साइंस, आई.एस.एस.एन. 2581–9925, वोल्यूम–4, न0– 01(III), पृ0 129–134

[5] डॉ. अनूप कुमार पोखरियाल और उषा पांगती (2023) 'उच्च एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन'

[5] डॉ. अजय पाल सिंह (2024) 'उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन', इन्टरनेशनल जर्नल फॉर मल्टिडिस्सीप्लीनरी रिसर्च, आई.एस.एस.एन. 2582–2160, वोल्यूम–6, इश्यू–4, पृ0 1–6

[6] संजय कुमार शुक्ल और सुनील सिंह (2024) 'माध्यमिक स्तर के हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के बौद्धिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन', National Journal of Multidisciplinary Research and Development, ISSN: 2455-9040, Volume 9, Issue 1, Page No. 44-47

[7] देवेन्द्र कुमार सिंह और डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव (2025) 'माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन' इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 11(8), पृ0 267–270

[8] एन. बजाज (1995) 'शैक्षिक मनोविज्ञान' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

[9] शर्मा, भारती (2004) 'मैथडोलॉजी ऑफ एज्यूकेशन रिसर्च', वोहरा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

[10] सेनाद रजनी रमेश (2017) 'ए स्टडी ऑफ इमोशनल इन्टेलीजेन्स ऑन सी.बी.एस.ई.एन्ड आइ.सी.एस.ई.एडॉलसेन्टस' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलोजी, 17(2), 16–22।

[11] अमृता कुमारी (2020) 'उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन' IJCRT, Vol-2, Issue71, Page 423-429